All India Council for Technical Education (AICTE)

Sponsored

International e-Conference on

Innovation in Rural Empowerment, Social Dynamics and Welfare in India

15th September 2020

PROCEEDINGS

PROCEEDINGS

Organized by

Department of Management Studies

Nandha College of Technology, Erode-638 052, Tamilnadu, India

(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

(Approved by AICTE, New Delhi & Affiliated to Anna University, Chennai)

ISBN 9789387748

SL.NO.	ARTICLE TITLE	NAME OF THE AUTHOR(S)	PAGE NUMBER
136.	SMART REAL-TIME DRAINAGE (OR) MANHOLE MONITORING SYSTEM USING INTERNET OF THINGS	K.J.SHUBHALAKSHNA C.SUJANA ABIRAMI R.PAVITHRA DEVI P.SWETHA	139
137.	A STUDY ON USAGE AND EFFECTS OF INORGANIC OILS AMONG CUSTOMERS OF ERODE DISTRICT	MR.P.SUDARVIZHIKANNAN	140
138.	HUMAN TRAFFICKING AND THREAT FOR WOMEN IN RURAL AREA - A REVIEW OF THE LITERATURE	MRS.M.LAKSHMI PRIYA DR.P.POONGODI DR.R.FLORENCE BHARATHI MRS.P.ANCHANA KIRUTHIKA	141
139.	A STUDY ON THE ROLE OF FARMERS TOWARDS ADAPTATION OF ICT TOOLS	MRS.ULCHI VENKATA SUMALATHA DR.K.NATARAJAN	142
140.	CUSTOMER PREFERENCE AND SATISFACTION TOWARDS PACKAGED MILK - A VIEW	DR.M.N.MOHAMED ABUSALI SHEIK, DR.T.POONGODI A.ABITHA BARVEEN	143
141.	MIGRATION OF SIKHS TO COIMBATORE AND THEIR CONTRIBUTIONS TO THE SOCIETY	MRS.J.DAISY THANGAMMAL	144
142.	SMALL FARM MANAGEMENT: ADOPTION OF AI AND IOT DEVICES	DR.S.JAISANKAR G.AGAN KEVIN	145
143.	CUSTOMER'S PERCEPTION TOWARDS CSR ACTIVITIES ON PUBLIC AND PRIVATE LIFE INSURANCE COMPANIES	DR.SP.MATHIRAJ N.NAGALAKSHMI	146
144.	SENTIMENT ANALYSIS FOR FOOD DELIVERY PLATFORM	DR.M.INDRA DEVI P.RAMYADEVI T.NANDHINI PRIYA A.ROSHINI	147
145.	A STUDY ON ANALYSIS OF PERFORMANCE OF MUTUAL FUNDS SELECTED PRIVATE AND PUBLIC SECTOR	DR.V.R.NEDUNCHEZHIAN R.ABINAYA	148

HUMAN TRAFFICKING AND THREAT FOR WOMEN IN RURAL AREA - A REVIEW OF THE LITERATURE

[1]Mrs.M.Lakshmi Priya, [2]Dr.P.Poongodi, [3]Dr.R.Florence Bharathi, [4]Mrs.P.Anchana Kiruthika

[1]Assistant Professor, Department of Management Studies, Nandha College of Technology, Erode

[2]Head of the Department, Department of BBA (CA), Kongu Arts and Science College (Autonomous), Erode

[3]Associate Professor, Vivekanandha Institute of Information and Management Studies, Thiruchengode

[4]Assistant Professor, Department of Management Studies (PG), Kongu Arts and Science College (Autonomous), Erode

[1]lakshmipriya.muthusamy@gmail.com, [2]nesakodi@gmail.com, [3]florence.bharathi@gmail.com, [4]anchanakiruthika@gmail.com

Abstract

Human trafficking is the trade of humans for the purpose of forced labour, sexual slavery, or commercial sexual exploitation for the trafficker or others. Women and girls are more prone to the trafficking act. It often results in mental health disorders and life-threatening infections. Poverty, lack of education, immigration policy, environmental conditions, fractured families, and a lack of good job opportunities are the real causes of human trafficking. According to a recent survey women are bought and sold with impunity and trafficked at will to other countries from different parts of India. These girls and women are sourced from rural areas in and around India. According to a poll by the Thomson Reuters Foundation, which surveyed 548 experts on six different indices, including healthcare, discrimination, cultural traditions, sexual and non-sexual violence, and human trafficking to study the vulnerability of violence against child and women. Although illegal under Indian law, human trafficking remains a significant problem in this country – and women and girls pay the highest price. Under the Immoral Trafficking Prevention Act (ITPA) trafficking for commercial sexual exploitation is penalized. The punishment ranges from seven years' to life imprisonment. The research paper further explores the cases, Legal framework to monitor and reduce the offences, practices for registering child birth and maintaining women databases to decrease the crime and the initiatives taken by Ministry of Women and Child development.

Keywords: Human trafficking, Women and girls, causes, cases, Legal framework, Punishment.

सन् 1980 से अब तक के हिंदी साहित्य में अनूदित साहित्य: एक विमर्श

संपादक

डॉ. हर्षलता शाह

डॉ. सरोज सिंह

Book Details

Book Name	: सन् 1980 से अब तक के हिंदी साहित्य में अनूदित साहित्य: एक विमर्श
Editors	: डॉ. हर्षलता शाह एवं डॉ. सरोज सिंह
Edition	: 2020
Pages	: 135
Book Size	: Crown
Price	: Rs. 300/-
Printed By	: Today Graphics 192 Bells Road Chepauk, Chennai-5
Publisher	: Today Publisher 192 Bells Road Chepauk, Chennai-5
ISSN	: 2394-4277

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में तमिल अनुवादकों का योगदान
– कोयम्बत्तूर के सन्दर्भ में

डॉ.वि.अन्बुमणि, अध्यक्ष
हिन्दी तथा अन्य भाषाएँ विभाग
कोंगु महाविद्यालय, ईरोड़, तमिलनाडु

अनुवाद शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुनःकथन । अर्थात् एक कोठी के संकेतों द्वारा बतायी बात को दूसरी कोठी के संकेतों से दोहराना अनुवाद है । अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका प्रयोग बिलकुल व्यावहारिक है । जिस तरह जीव के लिए स्वास अवश्य है वैसे ही अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर अपने साहित्य को समझने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है । अनुवाद के बिना संसार के सर्वोत्तम बातों की जानकारी से वंचित रह जाएँगे। वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का समर्थतम मार्ग है। अनुवाद की अनिवार्यता को किसी भाषा की समृद्धि का शोर मचा कर टाला नहीं जा सकता और न अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है। [1]

भारत की सभी भाषाओं के साहित्यिक एवं अन्य ग्रन्थों के अनुवादों द्वारा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ आधार दिया जा रहा है। इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य में अनेक विद्वान जुटे हुए हैं। अनुवाद के माध्यम से आदान-प्रदान की प्रक्रिया में एक दूसरी भाषा से शब्द लेने में संकोच नहीं किया जाता। इस प्रक्रिया से एक ओर जहाँ हिन्दी भाषा का अखिल भारतीय रूप निखर रहा है वहाँ साहित्य भी समृद्ध हो रहा है।[2] (भारतीय भाषाएँ और हिन्दी अनुवाद समस्या – समाधान – सं कैलाश चन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 तृतीय संस्करण) इस प्रकार अनुवादक भावात्मक

एकता की दिशा में दो संस्कृतियों, विचारधाराओं, चिंतन परंपराओं, भाषिक संस्कारों, रीति-रिवाजों, एवं अवधारणाओं के बीच सेतु का काम कर रहा है।

अनुवादक का एक और अनिवार्य गुण यह भी है कि वह अपने पाठक के ज्ञान एवं भाषा स्तर का ध्यान रखें। अनुवादक की सफ़लता इसी में है कि अनूदित कृति पाठक की समझ में आये और वह उसका लाभ उठा सके।[3] (साहित्यिक अनुवाद संवाद और संवेदना – ड़ॉ. आरसु)

यदि प्राचीन साहित्य के अनुवाद न किए गए होते तो आज राम, व सीता भारत भर के जनता के आदर्श पुरुष व नारी न होते। भगवत गीता व तिरुक्कुरल की विचार संपदा से सारा विश्व लाभान्वित नहीं होता। रवीन्द्रनाथ, बंकिम और शरत्चन्द्र केवल बंगाल तक ही सीमित रह जाते। तुलसी तथा प्रसाद के काव्य का रसास्वादन अन्य भाषाओं के पाठक नहीं कर पाते। पंचतंत्र, जातक कथाएँ एवं हितोपदेश आदि की कथाएँ, जो बच्चों को रोचक ढंग से नैतिक आचरण की शिक्षा देती हैं, वे विनष्ट हो गई होतीं।

अनुवाद एक ऐसा सटीक माध्यम है जिसके द्वारा पाठक वांछित क्षेत्र में अपनी जिज्ञासा-पूर्ति कर सकता है। शताब्दियों से अनेक लेखक अनुवाद की इस उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका को निभाते चले आ रहे हैं।

भारतीय संस्कृति का मूल रूप यदि आज भी भारतीय जनता के जीवन में ज्यों का त्यों लिया जाता है तो उसका श्रेय रामायण, महाभारत, भागवत आदि के आधुनिक भारतीय भाषाओं में किये गये अनेक रूपांतरों को प्राप्त है। विश्व मैत्री एवं सहयोग के इस नये दौर में किसी भी देश या प्रदेश की जनता को समझने के लिए उस देश या प्रदेश के साहित्य को समझना अत्यंत अनिवार्य हो गया है।

तमिल संस्कृति की गणना विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में की जाती है। तमिल भाषा कि प्राचीनता के कारण उसकी उत्पत्ती के सन्दर्भ में निश्चित काल निर्धारण नहीं हो पाया है। अतः

तमिल साहित्य के अध्ययन, विश्लेषण एवं अनुवाद महत्वपूर्ण हो जाता है। तमिल समाज पुराने काल के मान्यताओं को अपने में समेटकर, भविष्य के उन्नत जीवन की कल्पना करती हुई, वर्तमान में व्यवस्थित रूप मे योजनाएँ बनाकर बढनेवाला है। व्यक्तियों के अच्छे-भले आचार-विचारों के अनुसार संस्कार बनते हैं और ये ही संस्कार मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।[4] (तमिल संस्कृति, र.शौरिराजन, पृष्ठ सं 147) इन्हीं उत्तम संस्कारों का परिणत रूप ही संस्कृति है, जो त्याग में सुख का अनुभव करना सिखाती है। तमिल लोग इस जग जीवन को सुखी बनाने के लिए प्रेम और विवाह, श्रेष्ठ बनाने के लिए वीरता व उदारता, आदर्श सिद्ध करने के लिए त्याग एवं उपकार को मान्यता देनेवाले हैं।

अतः, इस शोध प्रपत्र में हिन्दी साहित्य के लिए अपने अनुवाद द्वारा महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले तमिल भाषी साहित्यकार, विशेषकर जो कोयंबत्तूर क्षेत्र के हैं उनके बारे में देखा जाएगा।

डॉ. वे.पद्मावती :

हिन्दी तथा तमिल साहित्य में तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद के क्षेत्र में डॉ. वे.पद्मावती सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। आपने हिन्दी व तमिल कहानियों में तुलनात्मक शोध करके डाक्टरेट उपाधी प्राप्त की है तथा जनवादी उपन्यासों में हिन्दी में डि.लिट उपाधी भी पायी है। आपने तमिल भाषा में भी एम.ए तक शिक्षा प्राप्त की है। मातृभाषा तथा पठित भाषा दोनों में सटीक अनुवाद करनेवाले लोग अल्प संख्या में ही हैं जिन्में आपका नाम प्रमुख है। आप अभी कोयंबत्तूर के पी.एस.जी.आर.कृष्णम्माल महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं । अनुवाद के क्षेत्र में आपकी सराहनीय काम के कारण "नल्लि तिसै एट्टुम" का अनुवादक सम्मान तथा केरल सांस्कृतिक केंद्र के साहित्य सम्मान से सम्मानित हैं। आपके अनुवाद कार्य निम्नलिखित हैं:-

बीसवीं शताब्दी की तमिल कहानी (पाँच संकलन),वित्तागिय नान, मूडुपनिच्चिरैयिल वण्णंगल, कालजयी महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार आदि इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

बीसवीं शताब्दी की तमिल कहानियों में 1930 से लेकर 2000 तक विविध कालखण्डों में विभक्त करके प्रत्येक कालखण्ड की हरेक परंपरा के बीस कहानियों को चुनते हुए पाँच संकलनों में तमिल कहानी के मुख्य स्तम्भ व.वे.सु.अय्यर, माधवय्या, भारतियार व पुदुमैप्पित्तन आदि की कुल सौ कहानियों का अनुवाद किया गया है। इस संकलन की कहानियों से हिन्दी भाषियों को तमिल जैसी समृद्ध भाषा के कहानी साहित्य का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त होने की आशा अवश्य की जा सकती है। हमारे स्वर्गीय अब्दुल कलामजी ने भी इस संकलन को सराहा है। इस संकलन में एक कहानी "कमीज़" ईरोड के एक महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में रखा गया है।

'कालजयी महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार' – तमिल भाषा के सुप्रसिद्ध कवि भारतियार की चुनी हुई कविताओं का अनुवाद है। अपनी लेखनी द्वारा लोगों में नवजागरण पैदा करनेवालों में भारति का नाम सर्वप्रथम है। गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में भारतियार ने रचनाएँ रची हैं। इन्हें तमिल भाषा के युग प्रवर्तक भी माना जाता है।

'वित्तागिय नान', विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की चुनी हुई कविताओं का तमिल अनुवाद है। तिवारीजी गोरखपुर के हैं और आधुनिक हिन्दी कवियों में बहुत प्रसिद्ध भी हैं। इनकी कविताओं में सामान्य जनता की जिन्दगी, उनकी रीति रिवाज़, इतिहास आदि ही प्रधान हैं। सबका मूल रूप होता है। जैसे कि करोडों पेड-पौधों का आधार एक छोटा सा बीज ही तो है। बीज द्वारा कवि का सोच सराहनीय है। बीज का कहना है कि मैं बडा होकर सब के लिए अपना सब कुछ दूँगा। यही वित्तागिय नान रूपी कविता है। अनुवादक ने बहुत ही ईमानदारी से कविताओं का चयन करके सही शब्दों के प्रयोग द्वारा तमिल में अनुवाद किया है।

'मूडुपनिच्चिरैयिल वण्णंगल' - साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कारित गोविंद मिश्र जी का उपन्याम 'कोहरे में कैद रंग' का तमिल अनुवाद है।

डॉ. आर. रमेश कुमार:-

हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों तथा कविताओं को तमिल में अनुवाद करना ही इनका प्रधान लक्ष्य रहा है। आपने तमिल भाषा में डाक्टरेट उपाधी प्राप्त की है तथा हिन्दी भापा में भी पीएच.डी कर रहे हैं। इसके अलावा आपने अनुवाद शास्त्र में भी एम.ए की शिक्षा प्राप्त की है। आप अभी कोयंवत्तूर के हिन्दुस्तान महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

'पाँच मिनट', 'मण वासल', 'रज़िया' तथा 'एन नूरु ग्रामंगलिन पेयर्गलै इरवोडु इरवाग माट्रि विट्टनर' आदि इनकी रचनाएँ हैं। इनमें 'पाँच मिनट', मण वासल, रज़िया आदि में हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानिकार प्रेमचन्द से लेकर वियोगिजी तक, उषा प्रियंवदा से कृष्णा सोवती तक की विश्व प्रसिद्ध कहानियों का तमिल में अनुवाद किया है तथा तमिल भाषियों को हिन्दी कहानी साहित्य से परिचय कराया है। सिर्फ़ यही नहीं कश्मीर के सुप्रसिद्ध कवि अग्नि शेखर की कविताओं का अनुवाद तमिल में किया है। खुद अपने ही देश में शरणार्थी का जीवन बितानेवाले कश्मीरवासियों के दर्द को दर्ज करने में आपकी लेखनी ने वहुत ही ईमानदारी से काम किया है। हर्ष की वात है कि उनकी अनूदित रचनाओं पर एम.फ़िल का शोध कार्य हुआ है।

श्रीमति.एन ललिता:-

आप हिन्दी तथा तमिल साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों तथा कविताओं को तमिल में बडे ही लगन से अनुवाद कर रही हैं। आपने तमिल, संस्कृत व योगा में एम.ए किया है। विद्या सागर, विद्या वाचस्पति, डॉ. अमृता प्रीतम लिटरेरी नेशनल अवार्ड, श्रीमति स्वर्ण ग्रोवर साहित्य सुरभि अनूदित कृति सम्मान आदि कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं। आप अभी कोयंबत्तूर के रत्नवेल सुब्रहमण्यम महाविद्यालय में भाषा विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।